पत्र कौमुदी
(वररुचि-विरचित)

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

संपादक
रेनू तिवारी

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ
स्वराज संस्थान संचालनालय, मध्यप्रदेश
1, उदयन मार्ग, उज्जैन -456010

पत्र कौमुदी
(वररुचि-विरचित)

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

सम्पादक
रेनू तिवारी

प्रथम संस्करण-2014(सवंत् 2070)

मूल्य /-

प्रकाशक
महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ
स्वराज संस्थान संचालनालय
मध्यप्रदेश
1, उदयन मार्ग, उज्जैन -456010
दूरभाष : 0734-2521499
फेक्स : 0734-2521499
Email :vikramadityashodhpeeth@gmail.com

आकल्पन- रुद्राक्ष ग्राफिक्स,उज्जैन

मुद्रण
पंचायतीराज मुद्रणालय, उज्जैन
1, औद्योगिक क्षेत्र, नागझिरी, देवास रोड़, उज्जैन

पूर्वरंग

वररुचि भारतीय परिवेश में सुज्ञात नाम है। विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे ये। परन्तु अपनी विभिन्न छवियों के कारण केरल, आन्ध्र तक में सुज्ञात हैं। केरल में वे विभिन्न बारह जातियों के पिता माने जाते हैं तो आन्ध्र की एक पुस्तक में उनका जीवन अंकित है। शाप, विद्याभ्यास, प्रवास, पातिव्रत्यमहिमा, तपःफल, परकायप्रवेश, अमात्य की उत्पत्ति, राक्षस को वश में करना, अन्तःपुर का विप्लव, सनोमिरा कथा, वैराग्य, प्रतिक्रिया, देहमोक्ष आदि अध्यायों में तेलुगु में श्री सत्यनारायण की पुस्तक पायी जाती है। इसी प्रकार अन्य भाषाओं में भी हैं। वररुचि की भारतीय परम्परा में एक बहुश्रुत विद्वान् के रूप में पहचान रही है। राजा भोज के श्रृंगारप्रकाश में उद्धृत एक श्लोकांश के अनुसार वररुचि सर्वज्ञकल्प (सर्वज्ञ के समान) थे। फिर भी धूर्तों ने उन्हें श्वपच (नीच) बना दिया।

धूर्तैर्यच्छ्वपचीकृतो वररुचिः सर्वज्ञकल्पोऽपि सन् ।11/381

वररुचि की सर्वज्ञता के प्रमाण के विभिन्न विषयक ग्रन्थ हैं जो या तो उपलब्ध हैं या जिनके उल्लेख या उध्दरण प्राप्त होते हैं। संस्कृत तथा प्राकृत व्याकरण, संस्कृत कोश, ज्योतिष्, निरुक्त आदि विषयों की उनकी छोटी छोटी अनेक पुस्तकें प्राप्त होती हैं। इनका प्राकृत प्रकाश प्राकृत का प्रथम कोश बताया जाता है। उस पर प्रसिध्द अलंकारशास्त्री भामह ने टीका लिखी थी। इनके निरुक्त समुच्चय का उल्लेख छठी शती के स्कन्दस्वामी तक ने किया है। देश–विदेश के हस्तलिखित ग्रन्थ भंडारों में वररुचि विरचित विभिन्न ग्रन्थों के सन्दर्भ प्रकाशित हैं।

वररुचि की एक ऐसे आदर्श कवि के रूप में प्राचीन काल

में प्रसिध्दि रही जिसके काव्य की नकल कर करके कई अकवि कवि होते रहते थे। चतुर्भाणी में ऐसे कवियों की चर्चा पायी जाती है। उससे पूर्व पतंजलि ने भी ''वाररुचं काव्यम्'' का उल्लेख अपने महाभाष्य में किया है। वररुचि के श्लोक, नीतिरत्न, उभयाभिसारिकाभाण आदि प्राप्त होते हैं। चारुमती नामक पुस्तक का एक श्लोक राजा भोज के श्रृंगारप्रकाश (28/4) में उद्धृत है। यह पुस्तक वररुचि की बताई जाती है।

किन्नर मिथुनं चारुमत्यां यथा –

कनककुण्डलमण्डितगण्डयाजघनदेशनिवेशितवीणया।
अमरराजपुरे वरकन्यया तव यशो विमलं परिगीयते।।

वररुचि विभिन्न विषयों के मर्मज्ञ, नये नये विषयों के मार्ग प्रवर्तक तथा शास्त्र और लोक के गहन वेत्ता थे। वे लोक के साथ ही प्रशासनिक पध्दति के मर्मज्ञ थे। इसका प्रमाण यह पुस्तक पत्रकौमुदी है।

पत्र लिखना आम बात है। पत्र का ढाँचा सदा एक रहा है। परन्तु पत्र रंगना, मोड़ना, पत्र लेखक के निशान, पत्र का रचना क्रम, पत्र लेख, पत्र लाना, पत्र पठन, पत्र का चिह्न, पद रखना, पत्र का कोना काटना, प्रशस्ति शब्द, श्रीशब्द प्रयोग, आकांक्षा उत्पादक पत्र, शंकास्पद पत्र, अंकपत्रविभाषा, भाषा पत्र, कीर्तिवर्णन श्लोक, प्रीतिश्लोक, नीतिश्लोक आदि की चर्चा सरल भाषा में इस पुस्तक में विद्यमान है। पुस्तक में 55 श्लोक हैं। फिर उदाहरण गद्य में हैं। गद्य ललित, समास बहुल और प्रौढ़ है। पुस्तक में समाप्ति सूचक पुष्पिका नहीं है। इसमें वररुचि कालीन गद्य और पद्य शैली के प्रमाण एक साथ प्राप्त हो जाते हैं।

पत्र कौमुदी के आरम्भ में श्रीकृष्ण के पदारविन्द युगल को नमन के बाद अन्य देवी देवता को प्रणाम किया गया है।

श्रीमत्कृष्णपदारविन्दयुगलं।

वररुचि के नाम से प्राप्त एक सुभाषित में माधव (कृष्ण) के आराधना की याचना की गयी है।

यत्र यत्राभि जायेयं यदि दुःखाकुले कुले।
तत्र तत्राक्षयं मेस्तु माधवाराधनं धनम्।।

(मेरी वररुचि पुस्तक, पृष्ठ 83)

अतः वररुचि की श्रीकृष्ण के प्रति विशेष भक्ति थी।

पत्र कौमुदी अपने क्रम में प्रथम है। गंगानाथ झा की प्रति तथा अन्य प्रतियों के आरंभ में 9 श्लोक हैं जो भूमिका बनाते हैं। यहाँ एक अधिक श्लोक पत्रकौमुदी में (और) है जिसमें राज लेखक परिचय है।

नृपानुवर्ती सततं नृपविश्वासरक्षकः।
नृपतेर्हितकान्वेषी स एव राजलेखकः।।

एक प्राचीन श्लोक में शिवस्तुति में स्याही, दवात, लेखनी, पत्र, लेखन, लेखिका (शारदा) आदि का क्रमबध्द उल्लेख पाया जाता है।

असित गिरिसमंस्यात् कज्जलं सिन्धु पात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनीपत्रमुर्वी
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।

ह्वेनसांग को यात्रा में सहयोग के लिए शिलादित्य ने विभिन्न जनपदों के राजाओं को पत्र लिखे थे। ये पत्र बारीक सूती वस्त्र पर लिखे गये थे और उन पर लाल लाख की मुद्रा लगी थी।

प्राचीन लेखा पध्दति (गायकवाड़ ओं. सी. बड़ोदा) में मत्स्यपुराण, गरुड़पुराण, गाङ्र्गधर पध्दति, शुक्रनीतिसार, मानसोल्लास, चाणक्यसंग्रह, राजनीतिरत्नाकर (पंचम तरंग, पटना) आदि में सम्बन्धित विवरण प्राप्त होते हैं। वररुचि ने लेखक

को ब्राह्मण बताया है। अन्य ग्रन्थों में उसे कायस्थ बताया गया है। क्षेमेन्द्र के कलाविलास, देशोपदेश, नर्ममाला, काव्यमीमांसादि में विभिन्न विवरण पाये जाते हैं। राजतरंगिणी, दलपतिराय के प्रशस्तिरत्नकोश, विद्यापति की लिखनावली आदि महत्वपूर्ण है। विश्वेश्वरानन्द शोध संस्थान (होशियारपुर) से प्रकाशित प्रशस्तिकाशिका महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस प्रकार सम्बन्धित प्रचुर (सामग्री) प्रकाशित –अप्रकाशित है। परन्तु उन सबमें पत्रकौमुदी महत्त्वपूर्ण है। बाणभट्ट की कादम्बरी में तो पत्रलेखा नामक एक परिचारिका भी है। पत्रलेखन सबन्धी साहित्य पर प्रचुर काम हो सकता है।

पत्रकौमुदी के गहन और तुलनात्मक अध्ययन से वररुचि युगीन विभिन्न पदाधिकार, मान और लोकाचार का गहन ज्ञान पाया जा सकता है। उस युग की भाषा, आदरपध्दति आदि भी उससे ज्ञात की जा सकती है।

इस पुस्तक के अनुसार वररुचि विक्रमादित्य का समकालीन था। विविधतीर्थ कल्प के अनुसार कात्यायन (वररुचि) ने विक्रमादित्य के समय संवत् एक चैत्र सुदी 2 गुरुवार को शासन पट्टिका लिखी थी। यह उल्लेखनीय है कि अब उज्जैन और अन्यत्र से विक्रमादित्य के अनेक शिलालेख, मूर्तिलेख प्राप्त हो चुके हैं।

वररुचि एक विख्यात विविध विषयक रचनाकार रहे। परंपरानुसार एक वररुचि ईसवी पूर्व चौथी शताब्दी में अन्तिम नन्द राजा के समय हुए और दूसरे विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक बताये जाते हैं। वररुचि की कतिपय पुस्तकों में विक्रमादित्य के उल्लेख प्राप्त होते हैं जो इस प्रकार हैं–

1– **लिंगविशेषविधि–**

इति श्रीमद्वाग्विलासमण्डितसरस्वतीकण्ठाभरणानेक–

विशरणश्रीनरपतिसेवितविक्रमादित्यकिरीटकोटिनिघृष्ट–

चरणारविन्दाचार्यवररुचिविरचितोलिङ्गविशेषविधिः समाप्तः।

2– विविध तीर्थकल्प के अनुसार कात्यायन ने विक्रमादित्य के समय संवत् 1 चैत्र सुदी 2 गुरुवार को शासन पट्टिका लिखी।

3– वररुचिनिरुक्तसमुच्चय (पृष्ठ 42) के अनुसार यह संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य का सभासद और धर्माधिकारी था।

4– पत्रकौमुदी के आरम्भ में भी वररुचि ने लिखा है कि कीर्तिसिध्द राजा विक्रमादित्य के निर्देश पर वररुचि ने पत्रकौमुदी की रचना की है।

विक्रमादित्यभूपस्य कीर्तिसिध्देर्निदेशतः।
श्रीमान् वररुचिर्धीमान्स्तनोति पत्रकौमुदीम्।। 2

5– विद्यासुन्दरचरित में कहा गया है कि विद्यासुन्दर चरित की रचना

वररुचि ने राजा की बात सुनने के बाद की।
वररुचिः स कविः श्रुत्वा वाक्यं नृपेन्द्रस्य।
विद्यासुन्दरचरितं श्लोकसमूहैस्तदारेभे।।

ऐसे विवरणों से प्रकट होता है कि वररुचि ने विक्रमादित्य के निर्देश पर अनेक ग्रन्थों की रचना की थी। बृहत्कथानुसार सुबन्धु वररुचि का भानजा था।

राजा भोज के श्रृंगारप्रकाश (11/381) के अनुसार वररुचि के काव्यशास्त्र, कोष, सिंहासनद्वात्रिंशिका (बंगाली संस्करण जिस पर जैन संस्करण आधारित है), नीतिरत्न, प्राकृतप्रकाश (भामहवृत्ति सहित) के रचनाकार सर्वज्ञ के समान वररुचि को धूर्तों ने श्वपच (जाति बहिष्कृत या चांडाल) बना दिया था।

धूर्तैर्यच्छ्वपचीकृतो वररुचिः सर्वज्ञकल्पोऽपि सन्।

बृहत्कथा के अनुसार वररुचि या पुष्पदंत पिशाच बन कर विन्ध्य क्षेत्र में रहता था। तीसरी शताब्दी के और दसवीं शताब्दी के ताम्रपत्रों के धार जिले के दक्षिण में पिशाचदेव के उल्लेख प्राप्त होते हैं।

विक्रमादित्य की रची पत्रकौमुदी डकन कालेज की पत्रिका में बहुत पहले मूल प्रकाशित हुई थी। उसमें स्पष्ट ही बताया गया है कि कीर्तिसिध्द विक्रमादित्य के निर्देश पर वररुचि ने पत्रकौमुदी की रचना की है। एक हस्तलिखित प्रति डिस्क्रिप्टिव केटलॉग आफ मेन्युस्क्रिप्ट इन मिथिला नं 7 पृष्ठ 75) की पुष्पिका में ग्रन्थकर्ता वररुचि को विक्रमादित्य रत्न कहा गया है। यह प्रति शक 1710 (1788 ई.) की है। यह उल्लेखनीय है कि परम्परानुसार विक्रमादित्य के नवरत्नों में एक वररुचि भी है।

पत्रकौमुदी के एक श्लोक के अनुसार पत्र में कुशलक्षेम संस्कृत में ही लिखें। फिर शुभ या अशुभ समाचार संस्कृत या प्राकृत में लिखें।

भाष्य संस्कृतेनैव कुशलं विलिखेत् सुधीः।
ततः शुभाशुभां वार्ता संस्कृतैः प्राकृतैस्तथा।। 23

इससे स्पष्ट है कि वररुचि के समय संस्कृत तथा प्राकृत दोनों ही भाषाएँ प्रायः पूरे भारत में लोकप्रचलित थीं। यह स्थिति ईसवी के आरम्भ के आसपास रही है। यह उल्लेखनीय है कि वररुचि जहाँ संस्कृत का ग्रन्थकार रहा वहीं उसने प्राकृत का ''प्राकृतप्रकाश'' नामक पहला व्याकरण ग्रन्थ लिखा था जिसकी टीका सुप्रसिध्द अलंकारशास्त्री भामह ने की थी।

संस्कृत की परम्परा में पत्र लेखन सम्बन्धी यह एक मात्र प्राचीन ज्ञात पुस्तक है। पत्र के कतिपय प्रारूप तो कालिदास के

मालविकाग्निमित्र सहित कुछ ग्रन्थों मे ंप्राप्त हो जाते हैं। परन्तु तत्सम्बन्धी विधिवत् नियमों की यही पुस्तक ज्ञात है। उसमें पत्र रंगना, आकार, लेखक चिह्न, रचना क्रम, पत्रलेख प्रकार, पत्र ले जाने का क्रम, पत्र का पठन, पत्रचिह्न पदन्यास प्रकार, पत्रकोण का काटना, प्रशस्ति पद का विन्यास, श्रीशब्द का पदक्रम, वांछित पत्र का उठाने के तरीके, शंकित लेखन क्रम, अंक पत्र विभाषा, भाषा पत्र का लक्षण, कीर्तिवर्णन के श्लोक, प्रीतिश्लोक, नीति श्लोक आदि का इस पुस्तक में संक्षेप में वर्णन किया गया है। अंत में गद्य में कुछ नमूने प्रशस्तियों के दिये गये हैं। कोलकाता से 1842 में प्रशस्ति प्रकाशिका में प्रकाशित हुई थी।(CBDCRI पूना xx,1-iv-1960 P 3-B) (Buletine of the Deccan Collage Research institute, yearwada, Poona- 6)। आशा है हिन्दी अनुवाद सहित यह अनोखी पुस्तक जिज्ञासु पाठकों के लिए उपयोगी प्रतीत होगी।

भगवतीलाल राजपुरोहित

पत्र कौमुदी

(श्रीमद्वररुचिकृता)

वररुचि विरचित

पत्रकौमुदी

श्रीमत्कृष्णपदारविन्दयुगलं ब्रह्मेश्वराद्य (द्या) मर।
श्रेणीनम्रकिरीटकोटिवडभि (वलभी) पुण्यार्चितं सन्ततम्।।
वाणीं च प्रणमामि विश्वजननीं प्रत्यूहविध्वंसिनीं।
भक्तानुग्रहविग्रहांभगवतीं नित्यंवचो वृध्दये।। 1।।

ब्रह्मा, ईश्वर (शिव) आदि देवगणों के झुके हुए मुकुट के शिखर के ढलान के पुष्पों द्वारा लगातार श्रीमान् कृष्ण के दोनों चरण कमलों की अर्चना होती रही, उन्हें मैं नमन करता हूँ। वाणी की वृध्दि के लिए विश्व की जननी भगवती वाणी को सदा प्रणाम करता हूँ जो बाधा नष्ट करती है और भक्तों पर कृपा की जो प्रतिमा है।।1।।

विक्रमादित्य भूपस्य कीर्तिसिन्धोर्निदेशतः।
श्रीमद्वररुचिर्धीमांस्तनोति पत्रकौमुदीम्।। 2।।

कीर्ति के सागर राजा विक्रमादित्य के निर्देश से मेधावी श्रीमान् वररुचि पत्रकौमुदी का प्रसार (रचना) कर रहा है।। 2।।

राज्ञां मन्त्रि प्रवीराणां पण्डितानां तथैव च।
गुरूणां स्वामिभार्याणां तथैव पितृपुत्रयोः।। 3।।
सन्यासिभृत्यशत्रूणां तथैवान्यविवेकिनाम्।
एतेषामपिसर्वेषां पत्रचिह्नादिकम् ब्रुवे।। 4।।

राजाओं, मंत्री–वीरों, पंडितों, गुरुओं, स्वामियों, पत्नियों, पिता, पुत्र, संन्यासी, सेवक, शत्रु, अन्य विवेकियों इन सबके पत्र, चिह्न आदि कहता हूँ।। 3–4।।

अथानुक्रमणिका

पत्राणां रञ्जनं चैव पत्रप्रमाणभङ्गकम् ।
पत्रलेखकचिह्नानि पत्रस्य रचनाक्रमः ।। 5 ।।
पत्रलेखप्रकारश्च पत्रस्य नयनक्रमः ।
पत्रस्य पठनं चैव पत्रचिह्नं ततः परम् ।। 6 ।।
पदन्यासप्रकारश्च पत्रकोणस्य कर्त्तनम् ।
प्रशस्तिपदविन्यासः श्रीशब्दस्य पदक्रमः ।। 7 ।।
उत्थाप्याकाङ्क्ष्यपत्रं च शङ्कितलिखनक्रमः ।
अङ्कपत्रविभाषा च भाषापत्रस्य लक्षणम् ।। 8 ।।
कीर्तिवर्णनश्लोकाश्च प्रीतिश्लोकास्तथैव च ।
नीतिश्लोकाश्च ग्रन्थेऽस्मिन् समासेनोपवर्णिताः ।। 9 ।।

अनुक्रमणिका–

पत्रों को रंगना, पत्र का प्रमाण (आकार), पत्र को मोड़ना, पत्र के लेखक के चिह्न, पत्र का रचना–क्रम, पत्र–लेख का प्रकार, पत्र ले जाने का क्रम, पत्र का पठन तब पत्र का चिह्न, पद (शब्द) रखने का प्रकार, पत्र के कोण काटना, प्रशस्ति के शब्द रखना, श्रीशब्द का पद क्रम, उत्थान–आकांक्षा योग्य पत्र, शंकित लेखन– क्रम, अंकपत्र विभाषा, भाषापत्र, कीर्तिवर्णन श्लोक, प्रीतिश्लोक और नीतिश्लोकों का इस ग्रन्थ में संक्षेप में वर्णन किया गया है ।। 5–9 ।।

सुवर्णरुप्यरङ्गाद्यै रञ्जयेत् पत्रमुत्तमम् ।
सामान्येन तु मध्यानां पत्ररञ्जनमीरितम् ।। 10 ।।

सोना, चाँदी, रंग आदि से उत्तम तथा मध्यम लोगों के पत्र रंगें। मध्य (लोगों) का सामान्य (रंग) से रंगना बताया गया है ।। 10 ।।

षडंगुलाधिकं हस्त पत्रमुत्तममीरितम् ।
मध्यमं हस्तमात्रं स्यात् सामान्यं मुष्टिहस्तकम् ।। 11 ।।

पत्र का आकार–

उत्तम पत्र एक हाथ छः अंगुल का बताया गया है। मध्यम एक हाथ का और सामान्य (बँधी) मुट्ठी वाला हाथ होता है ।। 11 ।।

पत्रं तु त्रिगुणीकृत्य उर्ध्द्वे तु द्विगुणं त्यजेत् ।
शेषभागे लिखेद्वर्णं गद्यपद्यादिसंयुतम् ।। 12 ।।

पत्र मोड़ने का प्रकार–

पत्र को तिगुना करके ऊपर का दुगना छोड़ दें। शेष भाग में गद्य–पद्य सहित अक्षर लिखें ।। 12 ।।

ब्राह्मणो मन्त्रणाभिज्ञो राजनीतिविशारदः ।
नानालिपिज्ञो मेधावी नानाभाषासमन्वितः ।। 13 ।।
मन्त्रणाचतुरो धीमान् नीतिशास्त्रार्थकोविदः ।
सन्धिविग्रहभेदज्ञो राजकार्यविचक्षणः ।। 14 ।।
सदाराजहितान्वेषी राजसन्निधिसङ्गतः ।
कार्याकार्यविचारज्ञः सत्यवादी जितेन्द्रियः ।। 15 ।।
स्वरूपवादी शुध्दात्मा धर्मज्ञो राजधर्मवित् ।
एवमादि गुणैर्युक्तः स एव राजलेखकः ।। 16 ।।

लेखक का लक्षण–

ऐसे गुणों वाला ही राजलेखक हो। वह ब्राह्मण हो, मन्त्रणा (विचार – विमर्श) का ज्ञाता हो, राजनीति का विशेष ज्ञाता हो, ऐसा न हो जो लिपि नहीं जानता हो अथवा अनेक लिपियों का ज्ञाता हो,मेधावी (प्रतिभाशाली) हो, अनेक भाषाओं (के ज्ञान) वाला हो, विचार विमर्श में चतुर हो, बुध्दिमान् हो, नीति–शास्त्र–अर्थशास्त्र या नीतिशास्त्र के अर्थ का विज्ञ हो, सन्धि–विग्रह और भेद (फूट) का ज्ञाता हो,। राजकार्य में चतुर हो, सदा राजा का हित खोजता रहता हो, राजा के निकट संगति में रहता हो, कार्य और अकार्य (करना और न करना विचार का ज्ञाता हो), सत्यवादी हो, जितेन्द्रिय या संयमी हो, स्वरूप कहने वाला हो शुध्दात्मा हो, धर्म का ज्ञाता हो और राजधर्म का ज्ञाता हो ।। 13–16 ।।

राजलेखकमाहूय नृपो ब्रूयात् प्रयत्नतः।
पत्रं कुरु यथायोग्यं गद्यपद्यादिसंयुतम्।। 17।।

पत्र –रचना का क्रम–

राजा राजलेखक को बुलाकर कहे कि प्रयत्न करके गद्य–पद्य आदि संयुक्त यथायोग्य पत्र प्रयत्नपूर्वक बनाओ।। 17।।

पण्डितं स्वयमानीय लेखकी रहसि स्थितः।
यथायोग्यानुसारेण पत्रं कुर्यान्मनोरमम्।। 18।।

लेखक स्वयं पंडित को लाकर एकांत में बैठकर यथा योग्य के अनुसार मनोहर पत्र करे।। 18।।

दिनद्वयत्रयं वापि विचार्य पण्डितेन वै।
स्वभ्रान्तेर्दूषणं ज्ञात्वा विलिखेत् पत्रपुस्तकैः।। 19।।

पंडित के साथ दो या तीन दिन विचार करके अपनी भ्रान्ति का दोष जानकर (समझकर) पत्र–पुस्तकों द्वारा लिखें।। 19।।

सामान्यपत्रे संलिख्य रहसि श्रावयेन्नृपम्।
नृपाज्ञया श्रुतेपत्रे विलिखेद् राजलेखकः।। 20।।

सामान्य पत्र पर भलीभाँति लिखकर राजा को एकांत में सुनाएँ। पत्र सुनने पर राजा की आज्ञा से राजलेखक पत्र पर लिखे।। 20।।

अङ्कुशं प्रथमं दद्यान्मङ्गलार्थं विचक्षणाः।
मध्येविन्दुसमायुक्तमधःसप्ताङ्कसंयुतम्।। 21।।
तदधः स्वस्ति विन्यस्य ततो गद्यं सुशोभनम्।
ततः श्रीशब्दरूपाणि पदन्यास क्रमं लिखेत्।। 22।।
भाषया संस्कृतेनैव कुशलं विलिखेत् सुधीः।
ततः शुभाशुभां वार्तां संस्कृतैः प्राकृतैस्तथा।। 23।।
पत्रप्रमाणसन्देशं ततो वार्तां नियोजयेत्।
कीतिप्रीतियुतंपद्यं ततः किमधिकादिकम्।। 24।।

पत्रप्रेषणश्लोकं च अङ्कमासादि संयुतम्।
सर्वेषामेव पत्रे तु लिखनं चैवमीरितम्।। 25।।
सर्वेषामेव पत्राणां विधिंज्ञात्वालिखेतु यः।
स्वदेशे कीर्तिमाप्नोति तथा देशान्तरेष्वपि।। 26।।
एवं शास्त्रक्रमंज्ञात्वा यो लिखेद्राजपत्रकम्।
स राजमन्त्रिभिः सार्ध्दं यशः प्राप्नोत्यनुत्तमम्।।27।।
शास्त्रसन्दर्भमज्ञात्वा यो लिखेद् राजपत्रकम्।
स राजमन्त्रिभिः सार्ध्दं दुर्यशी महदाप्नुयात्।। 28।।

पत्र लिखने का प्रकार–

सर्वप्रथम चतुर व्यक्ति मंगल के लिए अंकुश दे। मध्य में बिन्दु वाला हो और नीचे सात के अंक सहित हो। उसके नीचे स्वस्ति रखकर फिर सुन्दर गद्य (कथा) हो। तब श्री शब्द के रूप और पद न्यास (शब्द रखने) का क्रम लिखें। विज्ञ (लेखक) संस्कृत भाषा में ही कुशल लिखे। तब संस्कृत तथा प्राकृत में शुभ–अशुभ वार्ता लिखे। पत्र के प्रमाण (आकार) अनुसार सन्देश तब (अपनी) बात रखें। कीर्ति–प्रीति वाला पद्य हो फिर और अधिक क्या?आदि हो। पत्र भेजने का श्लोक और अंक, मास आदि सहित हो। इस प्रकार सबके पत्र में लिखना बताया है। विधि (नियम) जानकर सबके पत्रों में जो लिखता है वह अपने देश में कीर्ति पाता है और अन्य देशों में भी पाता है। इस प्रकार शास्त्र का क्रम जानकर जो राजपत्र लिखता है वह राजा और मन्त्रियों के साथ उत्तम यश को प्राप्त करता है। शास्त्र के सन्दर्भ को न जानकर जो राजपत्र लिखता है वह राजा और मंत्रियों के साथ अपयश प्राप्त करता है।। 21–28।।

राजपत्रंनयेन्मूर्ध्नि ललाटे राजमन्त्रिणाम्।
गुरुपत्रं नयेन्मूर्ध्नि ब्राह्मणानां तथैव च।। 29।।
यतिसंन्यासिनां चैव स्वामिनश्च तथैव च।
सादरैणवयत्नेन तथा मूर्ध्नि धारयेत्।। 30।।

भार्यापुत्रस्य मित्रस्य हृदये धारयेत् सुधीः।
प्रवीराणां कण्ठदेशे पत्रधारणमीरितम् ।। 31 ।।
एतेषां चैव पत्राणामुक्तं धारणलक्षणम्।
अन्येषामपि पत्राणां नियमो नात्र दर्शितः ।। 32 ।।

पत्र ले जाने का क्रम–

राजपत्र को सिर पर, राजा के मंत्रियों के पत्रों को ललाट पर, गुरु के और ब्राह्मणों के पत्र को सिर पर (रखकर) ले जाएँ। यतियों, संन्यासियों और स्वामियों के पत्र आदर सहित प्रयत्नपूर्वक सिर पर धारण करें। पत्नी, पुत्र और मित्र का पत्र हृदय पर रखें। प्रवीरों के पत्र कण्ठ स्थान पर धारण करना बताया है। इन्हीं पत्रों के धारण का लक्षण कहा गया है। अन्यों के पत्रों का नियम यहाँ नहीं दिखाया गया है।। 29–32 ।।

पत्रं धृत्वा नमस्कृत्य पूर्वाग्रेणैव स्थापयेत्।
दक्षिणाग्रेण सदसि नृपाग्रे राजलेखकः ।। 33 ।।
पत्रं वितत्य सदसि द्विवारं मनसा पठेत्।
स्फुटं पश्चात् प्रवक्तव्यमक्षोभो राजलेखकः ।। 34 ।।
रहसि श्रावयेत् पत्रं शुभं वा यदि वाशुभम्।
पत्रं श्रुत्वा विदित्वार्थं सभाया स्रावयेत्ततः ।। 35 ।।
रहस्यपत्रं रहसि नृपाग्रे श्रावयेद्द्विजः।
अशुभं नैव सदसि शुभं पत्रं नृपाज्ञयाः ।। 36 ।।
एवं क्रमेण पत्रार्थं श्रावयित्वा द्विजोत्तमः।
नृपतेः सन्निधौ स्थित्वा नृपाज्ञामनुवर्त्तते ।। 37 ।।

पत्र पढ़ने का प्रकार–

पत्र लेकर नमस्कार करके सबसे पहले सामने रख दें। सदन में राजलेखक दक्षिण की ओर से राजा के सामने रख दें। सदन में पत्र फैलाकर पहले मन ही मन दो बार पढ़ लें। फिर बिना क्षोभ (उत्तेजना या हिले डुले) राजलेखक को स्पष्ट बोलना चाहिए। शुभ हो या अशुभ पत्र को एकांत में सुनावें। पत्र सुनकर अर्थ ज्ञात करने के बाद फिर सभा में सुनाएँ। रहस्य वाले पत्र को ब्राह्मण एकांत में राजा के सामने सुनाए। सदनमें अशुभ पत्र कभी न सुनाएँ और शुभ पत्र राजा की आज्ञा से सुनाएँ। इस प्रकार उत्तम ब्राह्मण क्रमशः पत्र का अर्थ सुनकर राजा के पास ठहरकर राजा की आज्ञा का पालन करें।। 33–37 ।।

ऊर्ध्वं षड्ङ्गुलं त्यवत्त्वा वर्त्तुलं चन्द्रबिम्बवत्।
कस्तूरीकुङ्कुमैःकुर्याद्राजपत्रं सुचिह्नितम् ।। 38 ।।
मन्त्रिणां कुङ्कुमेनैव पण्डितस्यैव चन्दनैः।
गुरुणां चन्दनेनैव सिन्दूरैणव स्वामिनः ।। 39 ।।
भार्यायाश्चाप्यलक्तेन चन्दनैः पितृपुत्रयोः।
संन्यासिनां चन्दनेन यतीनां कुङ्कुमेन च ।। 40 ।।
रक्तचन्दनपङ्केन भृत्यस्य समुदीरितम्।
शोणितेनैव शत्रूणां पत्रचिह्नं प्रकल्पयेत् ।। 41 ।।
एतेषां चैव सर्वेषां यथायोग्यानुसारतः।
पत्रस्योर्ध्वे तु मतिमान् कुर्याच्चिह्नं सुवर्त्तुलम् ।। 42 ।।

पत्र के चिह्न–

ऊपर के छः अंगुल छोड़कर कस्तूरी– कुंकुम से चन्द्रमा के बिम्ब के समान राजपत्र को भलीभाँति चिन्हित करें। मन्त्रियों का कुंकुम से ही, पंडित का और गुरुओं के चन्दन से ही, स्वामी का सिन्दूर से ही, पत्नी का आलते से, पिता–पुत्र के चन्दन से, संन्यासियों के चन्दन से, यतियों के कुंकुम से, भृत्य का लाल चन्दन के लेप से और शत्रुओं के पत्र रक्त से ही पत्रचिह्न बनावें। बुध्दिमान् (पत्रलेखक) जो जिसके योग्य हो इन सबके पत्र के ऊपर अच्छा गोल चिन्ह बनावे।। 38–42 ।।

दक्षिणे पत्रकोणस्य अधस्ताच्छेदयेत् सुधीः।
एकाङ्गुलप्रमाणेन राजपत्रस्य चैव हि।। 43।।

राजपत्र का कोना काटने का प्रकार–

बुध्दिमान् पत्रलेखक राजपत्र के दायें कोने को नीचे से एक अंगुल काट दे।। 43।।

महाराजाधिराजं च दानशौण्डं तथैव च।
तथा सच्चरितं योज्यं कल्पवृक्षादिकं न्यसेत्।। 44।।
यथायोग्यानुसारेण तथैव गुणभेदतः।
राजपत्रेषु सर्वेषु पदन्यासक्रमं विदुः।। 45।।

राजपत्र आदि में पदन्यास (शब्द रखना)–

महाराजाधिराज, दानशौण्ड (दानदक्ष,) सच्चरित, कल्पवृक्ष आदि शब्द जोड़ें व रखें। योग्यतानुसार गुण– भेद से समस्त राजपत्रों पर शब्द रखने का क्रम ज्ञात होता है।। 44–45।।

प्रथमं गुणभेदेन तथा सच्चरितादिकम्।
विन्यस्य विलिखेत् प्राज्ञो मन्त्रिपत्रे पदक्रमम्।। 46।।

मन्त्री को पत्र के –

बुध्दिमान् (लेखक) सर्व प्रथम गुण के भेद के अनुसार सच्चरित आदि रखकर मन्त्री के पत्र पर पदक्रम लिखें।। 46।।

संख्यावद्वन्तिपदं शास्त्रार्थनिपुणादिकम्।
पण्डितानां च पत्रेषु विलिखेद् वै पदक्रमम्।। 47।।

पण्डित को पत्र के –

शास्त्र में निपुण आदि संख्या (गिनती) के वन्दना–शब्द पण्डितों के पत्रों में पदक्रम लिखें।। 47।।

सांख्यसिध्दान्तनिपुणं नमस्कारादिकं पदम्।
विन्यस्य विलिखेत् प्राज्ञो गुरुपत्रे पदक्रमम्।। 48।।

गुरू पत्र के –

सांख्य–सिध्दान्त–निपुण, नमस्कार आदि शब्द रखकर बुध्दिमान् व्यक्ति गुरु के पत्र पर पद का क्रम लिखे।। 48।।

प्रवर्यं सनमस्कारं प्राणप्रियादिकं पदम्।
विन्यस्य विलिखेद् धीमान् स्वामिपत्रे पदक्रमम्।। 49।।

स्वामी को पत्र–

प्रवर्य (सर्वोत्तम), प्राणप्रिया आदि शब्दों को नमस्कार सहित रखकर स्वामी के पत्र पर बुध्दिमान् व्यक्ति पद का क्रम लिखे।। 49।।

प्राणप्रियापदं साध्वीं तथा सच्चरितादिकम्।
भार्यापत्रे लिखेद् विद्वान् पदक्रममनुत्तमम्।। 50।।

भार्या को पत्र के –

विद्वान् व्यक्ति पत्नी को पत्र में ये उत्तम पद लिखें। प्राणप्रिया, साध्वी, सच्चरिता आदि।। 50।।

प्राणपुत्रपदं तद्वत् तथा सच्चारितादिकम्।
आशीर्वचनसंयुक्तं पुत्रपत्रे पदक्रमम्।।

पुत्र के पत्र का–

(प्राणपुत्र, पद वाला, सच्चरितादि और आशीर्वाद के वचन वाला पुत्र के पत्र का पद (शब्द) का क्रम हो।)

प्रभुवर्यं नमस्कारं तथा सच्चरितादिकम्।
विन्यस्य विलिखेत् पुत्रः पितृपत्रे पदक्रमम्।। 51।।

पिता को पुत्र का–

ये पद रखकर पुत्र पिता के पत्र पर पदक्रम लिखे– प्रभुवर्य, नमस्कार, सच्चरित आदि।। 51।।

सर्ववाञ्छाविनिर्मुक्तं सर्वशास्त्रार्थपारगम्।
संन्यासियतिपत्रेषु विलिखेच्च पदक्रमम्।। 52।।

संन्यासी, यती को पत्र के –

संन्यासी, यती के पत्रों पर ये पदक्रम लिखें– समस्त कामनाओं से मुक्त, समस्त शास्त्रार्थ में पारग (पारंगत)।।52।।

सामान्य भृत्यशत्रूणां विनियोज्यामुकं प्रति।
..............पदं भृत्य तुल्यादिकं तथा।53।।

सामान्य को पत्र के –

सामान्य भृत्य, शत्रु, नियुक्त, अमुक के प्रति भृत्य के तुल्य आदि पद लिखें।।53।।

एतेषामेव पत्रेषु यथायोग्यानुसारतः।
विन्यस्य विलिखेत् प्राज्ञः पदक्रममनुत्तमम्।।54।।

विद्वान् इन्हीं के पत्रों पर योग्यता के अनुसार उत्तम पद रखकर लिखें।।54।।

षड्गुरोः स्वामिनः पञ्च द्वे भृत्ये चतुरो रिपौ।
श्रीशब्दानां त्रयं मित्रे ह्येकैकं पुत्रभार्ययोः।।55।।

श्रीशब्द रखने की संख्या–

श्रीशब्द का प्रयोग गुरु को छः, स्वामी को पाँच, भृत्य पर दो, शत्रु पर चार, मित्र पर तीन, एक–एक बार पुत्र और भार्या को लिखें।।55।।

1– अथ राज्ञः प्रशस्ति–

स्वस्ति

श्रीगीर्वाणचयचूड़ारत्नराजिरोचिश्चुम्बितचन्द्रचूड़चरणनखे–न्दुवृन्दचन्द्रिकासन्दोहास्वादचतुरचेतस्चकोरवरविषमसमर–सञ्चरत्प्रबलतरतुरगखुरपुटपटलदलितभूपृष्ठोत्तिष्ठद्–भूयिष्ठधूलिधाराधूसरितसकलहरिदन्तरप्रचण्डभुजदण्ड–भ्राजमानखरतरारिवित्रासितप्रत्यर्थिपृथ्वीपतिसार्थप्रार्थिता–नुकम्पासुधासम्पातानवरतविद्वद्दारिद्र्यविद्रावणद्रविणराशि–

विश्राणनसमुपार्ज्जितोर्ज्जितयशोमरालावलिकवलितबलि–दधीचिसञ्चितयशोमृणालजालभूपालकुलतिलक–श्रीयुतमहाराजाधिराजेषु।

1– राजा की प्रशस्ति–

स्वस्ति श्री देव समूह के मस्तक के रत्नों की पंक्ति की किरणों से चुम्बित चन्द्रमौलि के चरण नख के चन्द्र समूह की ज्योत्स्ना के समूह के आस्वाद में चतुर चित्त रूपी श्रेष्ठ चकोर द्वारा विषम–सम संचार में बलशाली अश्व के खुर के पुट के समूह से दलित पृथ्वीतल से उठती प्रचुर धूल के समूह से धूसरित समस्त हरिदन्त के प्रचण्ड भुजदण्ड से शोभित प्रखर शत्रु से परेशान शत्रु राजा और सौदागर समूह द्वारा अपेक्षित कृपा –अमृत की वर्षा से लगातार विद्वानों की दरिद्रता दूर करते धन राशि के दान–अर्पण से प्राप्त फड़कते यश हंस की पंक्ति के द्वारा भक्षित (मोती)बलि, दधीचिद्वारा एकत्रित यश के कमल तन्तु के समूह रूप राज–कुल के उज्ज्वल तिलक श्रीसम्पन्न श्रीयुत महाराजाधिराज।

2– (अन्यपाठ)

स्वस्तिप्रचण्डदोर्दण्डखण्डखण्डितारिमण्डलमुण्डोन्मुक्तमुक्तावलीमण्डितसंग्रामाङ्गणरिङ्गमाणानेकवारणवाहा–दिकायकाण्डवक्रतरनक्रचक्रचंक्रमणदुरतिक्रमणीयापगापति, .
......................प्रभूतयशश्चन्द्रचन्द्रिकाद्योतविद्योतिताखिल–जगन्मण्डलविविधद्रविणार्पणसन्तोषितसूरिसमूहस्तूय–मानवदातकीर्तिनर्तकीनर्तनलीलालोवलेपितगीतिधुरीणो–उर्वश्यादिवेश्याजनसविलासगीयमानगुणश्रवणान्दोलिता–खण्डश्रवणकुण्डलपरितःप्रसर्पितप्रतापतपनात्तापितारााति–ततिसमध्यासितनिकुंजप्रस्तुतसौन्दर्यगाथाप्रमुदितश्रीमन्–नारायणचरणकिंकरश्रीयुतमहाराजदानशौण्डेषु।।2।।

स्वस्ति अत्यन्त चिरकाल से आराधित श्रीविश्वेश्वर के चरण–कमल की कृपा से प्राप्त अत्यन्त विस्तृत निर्दोष विद्या–विलास की अमृत–धारा–परम्परा....... विविध अलंकार से अलंकृत............. स्वस्ति प्रचण्ड भुजा पराक्रम से शत्रु समूह के विनाशक, शत्रु के उन्मुक्त मुंड–मोतियों के हार से शोभित

संग्राम भूमि में...... गज सूमह तथा अन्य वाहन की सवारी करने वाले, वक्र शरीर के अंग मगर समूह के विथरने से पार न करने योग्य सागर के समान प्रचुर यश के चन्द्र की चाँदनी से सम्पूर्ण संसार के मंडल के प्रकाशक। विविध द्रव्य अर्पण से सन्तुष्ट विद्वानों के सूमह द्वारा स्तुति किये हुए प्रशस्त कीर्ति रूपी नर्तकी की नृत्यलीला के लेप से लिप्त गीति की शिखर उर्वशी आदि वेश्याओं द्वारा विलासपूर्वक गाये जाने वाले गुण सुनने से झूमते कानों के कुण्डल के आसपास फैलते प्रताप के सूर्य से खूब तपाये गये शत्रुगणके जलाने वाले तथा उनमें बैठे हुए कुंज कुंज में प्रस्तुत सौन्दर्य गाथा से प्रमुदित श्रीमान् नारायण के चरण सेवक दान में दक्ष श्रीयुत महाराज।

स्वस्तिश्रीमन्मुरहरभगवच्चरणारविन्दद्वन्द्वमकरन्द–सन्दोहास्वादानन्दितमनो........गीर्वाणगणदारद्रयविद्रावण–द्रविणराशिविश्राणनोपार्जितयशःसुधाधामधारालङ्कृत–धरामण्डलप्रवलप्रताप............. ।

स्वस्तिश्रीविश्वेश्वरचरणसरोरुहानुग्रहसमा–सादितातिविततत..........विलासपीयूषपरम्परा...........
विविधालङ्कारालङ्कृतभूयिष्ठशब्दार्थसन्दर्भचातुरीसमु–पचितानुपमयशःशारदसुधाधामभूषितभूमण्डलाखण्डला–सम्मानितश्रीयुतमहाराजाधिराजेषु।

स्वस्ति........ वदान्यगणसञ्चितयशस्तारापटल......

नवरतविहितातिनिर्मलमहिमाप्रचण्डांशुदानधाराध्वंसितविद्वद्दारिद्रयध्वान्तसन्तानाहितोद्वेगभरपरमार्जुनप्रवल.....
विहितगुणखर्वाकूपारवीचि..........सुखारोहणसाधन.............
भूदेव.......पावनोचितपुण्यपरंपरापवित्रीकृतधरित्री–तलश्रीलश्रीमहा.... ।।

2– अन्य पाठ–

स्वस्ति श्रीमान् मुरारि भगवान् के चरणारबिन्द युगल के पराग–समूह के आस्वाद से आनन्दित मन वाले देव समूह की दरिद्रता के विनाशक धन राशि के वितरण से प्राप्त यश वाले अमृत आलोक की धारा से अलंकृत धरा मण्डल के प्रबल प्रताप........ स्वस्ति श्री विश्वेश्वर चरण–कमल के अनुग्रह से प्राप्त अत्यन्त विस्तृत..... विलास–अमृत की परम्परा .....विविध अलंकारों से अलंकृत.........प्रचुर शब्द –अर्थ के सन्दर्भ की चतुराई से भलीभाँति एकत्रित अनुपम यशस्वी शरद कालीन अमृत–आलोक से विभूषित सम्पूर्ण पृथ्वी के इन्द्र से सम्मानित श्रीमान् महाराजाधिराज। स्वस्ति दयालुओं में संचित यश वाले तारा समूह..........नव में लीन से किया हुआ अत्यन्त निर्मल महिमा वाले, प्रचण्ड किरण (सूर्य) के दान की धारा से विध्वस्त विद्वानों की दरिद्रता के अन्धकार की परम्परा अहित के उद्वेग के भार से परम अर्जुन से प्रबल.... कृतकर्म के गुणों के तीक्ष्ण समुद्र (सूर्य) की लहर.... सुखपूर्वक चढ़ने का साधन......ब्राह्मण....पवित्र के लिए उचित पुण्य की धारा से पवित्र किया गया धरातल श्रीमहा.............. ।)

3– अथ मन्त्रि प्रशस्तिः–

स्वस्तिश्रीमत्समस्तसामन्तसेवकनिर्व्वाहकेषुकोषगोकृषिकृषीबलगजबाजिगृहपरिवारहर्षहेतुनीतिसेतुरक्षण–

निपुणेषु ।अस्मद्विट्रवसैकनिकेतनेषुश्रीमन्त्रिप्रवीरेषुआशी–राशिनिवेदनकोऽयंवर्णभूतोऽत्रत्यंभव्यमावेदयन् तत्रत्यं भव्यमव्याहतमनुदिनमनुक्षणं पृच्छति स्म।।

3– मन्त्री की प्रशस्ति–

ओम् स्वस्ति श्री समस्त सामन्त सेवक निर्वाहकों में कोश, गो, कृषि, कृषक, गज, अश्व, गृह, परिवार के हर्ष के हेतु, नीति के सेतु (बाँध) की रक्षा में निपुण हमारे एकमात्र विश्वास के घर में श्री श्रीमन्त्रि प्रवीर को आशीर्वादों सहित यहाँ का भव्य (समाचार) बताते हुए वहाँ का मंगल समाचार प्रतिदिन प्रतिपल पूछते हैं।

4– अथ गुरुप्रशस्तिः–

स्वस्तिश्रीमन्नारायणपदपाधोरुहनिःसरन्मकरन्दमधु–पायमानमानसेषुविविधविद्याविद्योतिताखिलगुणगणा–लङ्कृतवेदवेदांगपारगस्वाश्रमोचिताचारसम्पन्नपरम–हंसपरिव्राजकाचार्यासेव्यमानश्रीगोविन्दस्वरूपगुरुचरणार–विन्देषु कोटिशः प्रणामाः।।

4– गुरु प्रशस्ति–

स्वस्ति श्री नारायण चरण कमल से निकले पराग के भँवरे के समान मानस में। विविध विद्या से प्रकाशित समस्त गुणों से अलंकृत वेद, वेदांग में पारंगत अपने आश्रम के लिए उचित आचरण से सम्पन्न परमहंस परिव्राजकाचार्य की सेवा में निरत श्री गोविन्द स्वरूप चरण कमलों में कोटि कोटि प्रणाम।

5– अथ भार्यायाः स्वामिप्रशस्तिः–

स्वस्ति श्रीमदुद्यामप्रेमहेमभूषितास्मदादिभक्तजनेषु कर्णयोधिष्ठानेषु नेत्रयोरधिदैवतेषु। कामाय परिणामेषु। चातुर्वर्गप्रदायकेषु ।ममापररूपेषु ।श्रीमत्स्वामिचरणार–विन्देषु। गोविन्द इवेन्दिरायाः शंकर इव गिरिजायाः–

महेन्द्र इव पुलोमजायाः प्रतिदिनं वर्ध्दमाना समाराधना–प्रणामपूर्व्वमास्ताम्।

5– पत्नी द्वारा स्वामी की प्रशस्ति–

स्वस्ति श्रीमान् उद्दाम प्रेम हेम (स्वर्ण) से विभूषित, हमारे जैसे भक्त जनों, कानों के अधिष्ठान, नयनों के अधिदेवता, काम के परिणाम, चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष,) प्रदान करने वाले, मेरे अन्य रूप (अनन्य), श्रीमान् स्वामी के चरण कमलों में, गोविन्द की इन्दिरा, शंकर की गिरिजा, इन्द्र की शची प्रतिदिन बढ़ती आराधना सहित प्रणाम करती हूँ।

6– अथभर्तुर्भार्य्याप्रशस्तिः–

स्वस्तिश्रीमत्समस्तप्रेमपारलावण्यमूर्तौप्रियतमायां–नेत्रयुग्मस्यकनीनिकायामिव चन्द्रस्य क्षणदायामिव–कमलाकरस्य कमलिन्यामिव पथिकस्य छायामिवतृषातुरस्य शीतलामृतधारायामिव मम सप्रेमनिवेदयन्ती पत्रीशुभाशी–न्निवेदयतु सर्व्वदा।

6– पति द्वारा पत्नी की प्रशस्ति–

स्वस्ति श्रीमती मेरी समस्त उत्कृष्ट प्रेम और लावण्य की मूर्ति प्रियतमा, नयन–युगल की पुतली के समान, चन्द्र की रात्रि के समान, सरोवर की कमलिनी के समान, पथिक की छाया के समान, प्यासे की शीतल अमृत की धारा के समान प्रेम सहित निवेदन करती पत्रिका, सदा शुभ आशीर्वाद निवेदन कर रहा हूँ।

7– अथ पुत्रस्य पितरं प्रति प्रशस्तिः–

स्वस्तिश्रीमदभिनववशम्बदचित्तचिन्तिस्वीयानुरागा–नुरंजितानुगृहीतस्वगृहयेवर्गेषु ।निजचरणसरोजरञ्जित–परागसंरक्तास्मदादिभालस्थलविशालभाग्यसम्भावुकेषु। श्रीयुत पितृचरणसरोरुहेषु ।अकिंचितकरकिंकरस्यमयबध्द–

करसम्पुटस्यावनीपृष्टलग्नाःसाष्टाङ्गप्रणतयःसहस्र–
मजस्रंविज्ञाप्यञ्च।

7– पुत्र द्वारा पिता की प्रशस्ति–

स्वस्ति श्रीमान् नवनूतन आज्ञाकारी मन से चिन्तन करते अपने स्नेह से अपने गृहवर्ग (कुटुम्ब) को अनुरंजित करने वाले अपने चरण कमलों के पराग से सम्पृक्त पराग से रंजित हमारे आदि ललाट (भाग्य) को विशालता प्रदान करने वाले श्रीमान् पिताजी के चरण कमलों में अकिंचन सेवक हाथ जोड़कर धरती पर लगकर साष्टांग हजारों निरन्तर प्रणाम कर निवेदन है।

8– अथ पितुः पुत्रं प्रति प्रशस्तिः–

**स्वस्तिश्रीविश्वेश्वरचरणसरोरूहानुग्रहसमासादि–
तातिविततानवद्यविद्याविलासपीयूषपरम्पराभावुकानुपम–
माधुरीधुरीणविविधगुणालंकृतनिजवंशावतंससकल
विश्वासनिधाननिजकुलपवित्रीकृतात्मप्रायेषु।श्रीयुतशुध्दा–
चारपरिपूरितपुत्रेषु। शुभाशिषां राशयःसन्तु विज्ञाप्यञ्च।**

8– पिता द्वारा पुत्र की प्रशस्ति–

स्वस्ति श्री विश्वेश्वर के चरण कमल की कृपा से प्राप्त अत्यन्त विस्तृत दोषरहित विद्या–विलास की अमृत परम्परा अत्यन्त भावुक (स्नेह) की अनुपम मधुरता में अग्रणी विविध गुणों से अलंकृत अपने वंश के मुकुट, समस्त विश्वासों के निधान, अपने कुल को यश से पवित्र करने वाले, शुध्द आचरण से पवित्र पुत्र को प्रचुर शुभाशीष हों और समाचार है।

9– अथसंन्यासियतिप्रशस्तिः–

**स्वस्तिश्रीमत्परमहंसपारिव्राजकाचार्य्यकरणनिपुणता–
पराङ्मुखेषु।विषमविषयदोषदर्शनदूषितप्रपंचरचनाविभावेषु
वेदवेदान्तसांख्यसिध्दान्तवध्ददेवप्रकृतिपुरुषविवेकज्ञानशी–
लेषुसंख्यावन्मुख्यवन्दितचरणारविन्दस्वाश्रमोचिताचारपरि–**

**पालनपवित्रीकृतधरित्रीतलेषु। सकलभूदेव पूजित–
श्रीयुतगोस्वामिचरणारविन्देषु।ममावनीसंलग्नाःसाष्टाङ्ग–
प्रणामसहस्रमजस्रंओंनमोनारायणायेतिमन्त्रेणाकलितमस्तु।**

9– संन्यासी यति की प्रशस्ति–

स्वस्ति श्रीयुत परमहंस परिव्राजकाचार्य करण (कर्म माध्यम) निपुणता से पराङ्मुख, विषयों के विषम दोष देखने के दूषित झंझट की रचना के ज्ञाता, वेद– वेदान्त सांख्य–सिध्दान्त से सम्बध्द देव, प्रकृति, पुरुष के विवेक–ज्ञान से सम्पन्न अग्रणी विद्वानों द्वारा जिनके चरण कमलों की वन्दना की जाती है, अपने (संन्यास) आश्रम के लिए उचित आचार के परिपालन से पृथिवी को पवित्र करने वाले, समस्त ब्राह्मणों द्वारा पूजित श्रीयुत गोस्वामी के चरण कमलों में धरती पर लगाकर साष्टांग ''ओं नमो नारायण'' मंत्र सहित निरन्तर सहस्रों प्रणाम (अर्पित) हों।

10– अथ भृत्य प्रशस्तिः–

**स्वस्तिभगवच्चरणपरायणसकलद्रविणाधि–
रक्ष(रंज)कगोमहिषादिप्रतिपालकनिखिलवंशानु–
सेवकवंशवदामुकभृत्यं प्रति।**

10– भृत्य (सेवक) की प्रशस्ति–

स्वस्ति भगवान् के चरणों में अनुरक्त समस्त सम्पदा का रक्षक या आनंद लेने वाला, गाय–भैंस पालने वाला, पूरे वंश के सेवक आज्ञाकारी अमुक भृत्य के प्रति।

11– अथारि प्रशस्तिः –

**स्वस्तिसमरांगणभ्रष्टप्रतिभट,(टा) यशः –
परिपूरितसकलसामन्तराजधानीविजृम्भितवीरशस्त्राव–
शोषितनिजवंशानुरक्षकसततपरित्रस्त शरणागतामुकं प्रति।**

11– अरि (शत्रु) की प्रशस्ति–

स्वस्ति रणक्षेत्र से भागे हुए प्रतिद्वन्दी (योध्दा), अयश से परिपूर्ण समस्त सामन्तों (अधीनस्थ) राजाओं की राजधानियों में व्यापक वीरशस्त्रों से अवशोषित शोषित अपने वंश के पालन में निरंतर परेशान होकर शरण में आये हुए अमुक के प्रति।

12– अथ विवेकिनां प्रशस्तिः–

स्वस्तिश्रीभगवत्पदपङ्कजपूजनोपचितपुण्य–पुञ्जपवित्रीकृतान्तः करणदिग्विलासिनीविसरध्दम्मिल्ल–मिलन्मल्लीकामालाकला,यशोऽनुबन्धनिरबधिवसुविश्राण–नाधरीकृतसुरपुर भूमिरुहेषु।

स्वस्ति श्रीमत्परमेश्वर पादपाथोरुहास्वादचतुर–चित्तचंचरीक, भूवृन्दारक, वृन्दावन जनिताचितयशः पठीरपङ्कपटलालंकृतदिगङ्गनागणास्तनतट,प्रबल प्रतापोर्व्वखर्व्वीकृतप्रत्यर्थिसार्थगर्व्वाकूपारपारेषु।

12– विवेकियों की प्रशस्ति–

स्वस्ति श्रीभगवान् के चरण–कमल की पूजा से संचित पुण्य समूह से पवित्र अन्तःकरण वाले दिग्वधुओं के फैलते केश समूह में लगी (मिलती) मल्ली (मोगरे की) माला के समान (शुभ्र) यश से बँधा (लगा) अनन्त वित्त वितरण से स्वर्ग पुरी के कल्पवृक्ष को भी नीचा (पीछे) कर देने वाले।

स्वस्ति श्रीमान् परमेश्वर के चरण कमल के आस्वाद में चतुर चित्त के भ्रमर भू–देव (विप्र), वृन्दावन में उत्पन्न अपार कीर्ति विद्या (चन्दन) के लेप समूह से दिग्वधुओं के स्तनतट को अलंकृत करने वाले, प्रबल प्रताप की बड़वाग्नि से शत्रु समूह को छोटा या

अपंग करके उनके गर्व के कूप के आरपार जाने वाले (के प्रति)।

।। इति श्रीमद्वररूचिकृता पत्र कौमुदी समाप्ता ।।

। श्रीमान् वररुचि –विरचित पत्रकौमुदी समाप्त।

(मंगलं महाश्रीः)

परिशिष्ट –1

मालविकाग्निमित्र में पिता पुष्यमित्र का पत्र इस प्रकार है–

स्वस्ति। यज्ञशरणात् सेनापतिः पुष्यमित्रो वैदिशस्थं पुत्रमायुष्मन्तं अग्निमित्रं स्नेहात् परिष्वज्य अनुदर्शयति–

विदितमस्तु योऽसौ राजयज्ञदीक्षितेन भया राजपुत्रशतपरिवृतं वसुमित्रं – गोप्तारमादिश्य संवत्सरोपावर्तनीयो निरर्गलस्तुरङ्गमो विसर्ज्जितः स सिन्धोर्दक्षिणे रोधसि चरन्नश्वानीकेन यवनेन प्रार्थितः। तत उभयोः सेनयोर्महानासीत् संमद्र्दः।

ततः परान् पराजित्य वसुमित्रेण धन्विना।
प्रसह्य ह्रियमाणो मे वाजिराजो निवर्त्तितः।। 5/15

सोऽहमिदानीमंशुमतेव सगरः पौत्रेण प्रत्याहृताश्वो यक्ष्ये। तदिदानीमकालहीनं विगतरोषचेतसा भवता वधूजनेन सह यज्ञ सेवनायागन्तव्यमिति अनुगृहीतोऽस्मि।

मालविकाग्निमित्र, 5/15 के आसपास

परिशिष्ट–2

वररुचि के कुछ और श्लोक –

(सुभाषित ग्रन्थों में वररुचि के नाम से उपलब्ध अन्य भी अनेक श्लोक हैं जो मेरी ''वररुचि'' पुस्तक में प्रकाशित हैं। उसमें असंकलित श्लोक ही यहाँ प्रस्तुत हैं।)

पन्यान्यादाय वेगाच्चटुलतर
क(रो भाय)यित्वाकिरीटां
डिम्भैर्दत्तोच्चतालैर्विहित
कलकलै ईरतो हन्यमानः।
त्यक्त्वावीथीस्थिताभिः
सचकितनयनं वीक्ष्यमाणोऽङ्गनाभिः
धीत्कृत्योत्पत्य याति
द्रुतमहतगतिर्वक्रितास्यःप्लवङ्गः।। 9।।

श्रीधर,सदुक्तिकर्णामृत,जातिपध्दतिः, 96/9

गिरे हुए किरीट (सिर की टोपी) आदि लेकर जल्दी से चंचल हाथ वाला डराकर, बच्चों द्वारा जोर से ताली बजाकर और कल कल चिल्ला चिल्लाकर मार भगाया गया, जिसे मार्ग छोड़कर खड़ी स्त्रियाँ चकित आँखों से देखते हुए धिक्कार की आवाज से भगाने के कारण टेढ़ा मुँह करते हुए तेज गति से उछल उछल कर बन्दर जा रहा है।।9।।

यातस्यातमनन्तरं दिनकृतो
वेषेण रागान्वितः
स्वैरं शीतकरः करं कमलिनीमा –
लिङ्गितुं योजयन्।

शीतस्पर्शमवेत्य सान्द्रमनया
रुध्दे मुखाम्भोरुहे
हास्येनेव कुमुद्वतीदयितया
वैलक्ष्यपाण्डूकृतः ।। 922 ।।
वसुकल्पस्य। वररुचेः। राजशेखरस्य 29/26

सुभाषितरत्नकोश

सागर (नदी) पार करने के गये हुए के भाड़े के बाद सूर्य वेश से अनुरागमय (लाल) हो गया। चन्द्रमा कमलिनी के आलिंगन के लिए मनमाने बेरोक हाथ से छूता है। सघन शीतल स्पर्श को जानकर मुखकमल ढक लेने पर कुमुद्वती प्रेमिका द्वारा मानो हास्य द्वारा लज्जा या उलझन या बनावटी मुस्कान से पीला कर दिया गया।

संदर्भ –

1– पत्रकौमुदी– सं. सुरेशचन्द्र बनर्जी, डेकन कॉलेज, पूना
2– पत्रकौमुदी– सं. श्रीमन्नारायण द्विवेदी, पीयूष प्रकाशन,इलाहाबाद
3– पत्रकौमुदी– कलकत्ता।

पत्रकौमुदी के अनेक हस्तलेख विभिन्न ग्रन्थागारों में सुरक्षित हैं।